# ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

## जन्मपत्रिका

**RAJESH**

18/4/1974    11:30 AM

Ujjain, Madhya Pradesh, India

# सामान्य विवरण

## सामान्य विवरण

| | |
|---|---|
| जन्म दिनांक | 18/4/1974 |
| जन्म समय | 11:30 |
| जन्म स्थान | Ujjain, Madhya Pradesh, India |
| अक्षांश | 23 N 10 |
| देशांतर | 75 E 47 |
| समय क्षेत्र | 5.5 |
| अयनांश | 23:29:52 |
| सूर्योदय | 06:04:14 |
| सूर्यास्त | 18:48:42 |

## घात चक्र

| | |
|---|---|
| महीना | चैत्र |
| तिथि | 3,8,13 |
| दिन | गुरुवार |
| नक्षत्र | आर्द्रा |
| योग | दंड |
| करण | किंस्तुघ्न |
| प्रहर | 3 |
| चंद्र | 9 |

## पंचांग विवरण

| | |
|---|---|
| तिथि | कृष्ण एकादशी |
| योग | शुक्ल |
| नक्षत्र | शतभिषा |
| करण | बालव |

## ज्योतिषीय विवरण

| | |
|---|---|
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| योनि | अश्व |
| गण | राक्षस |
| नाड़ी | आदि |
| जन्म राशि | कुम्भ |
| राशि स्वामी | शनि |
| नक्षत्र | शतभिषा |
| नक्षत्र स्वामी | राहु |
| चरण | 3 |
| युञ्जा | प्रभाग |
| तत्त्व | वायु |
| नामाक्षर | सी |
| पाया | ताम्र |
| लग्न | मिथुन |
| लग्न स्वामी | बुध |

# ग्रहस्तिथि

| ग्रह | वक्री | जन्म राशि | अंश | राशि स्वामी | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | | मेष | 04:19:37 | मंगल | अश्विनी | केतु | 11 |
| चन्द्र | | कुम्भ | 14:17:34 | शनि | शतभिषा | राहु | 9 |
| मंगल | | मिथुन | 05:15:04 | बुध | मृगशिरा | मंगल | 1 |
| बुध | | मीन | 17:38:55 | गुरु | रेवती | बुध | 10 |
| गुरु | | कुम्भ | 15:24:31 | शनि | शतभिषा | राहु | 9 |
| शुक्र | | कुम्भ | 18:29:46 | शनि | शतभिषा | राहु | 9 |
| शनि | | मिथुन | 06:26:24 | बुध | मृगशिरा | मंगल | 1 |
| राहु | R | वृश्चिक | 28:44:34 | मंगल | ज्येष्ठा | बुध | 6 |
| केतु | R | वृष | 28:44:34 | शुक्र | मृगशिरा | मंगल | 12 |
| लग्न | | मिथुन | 26:33:13 | बुध | पुनर्वसु | गुरु | 1 |

**सूर्य**
मेष
अश्विनी

हानिप्रद

**चन्द्र**
कुम्भ
शतभिषा

सम

**मंगल**
मिथुन
मृगशिरा

हानिप्रद

**बुध**
मीन
रेवती

सम

**गुरु**
कुम्भ
शतभिषा

हानिप्रद

**शुक्र**
कुम्भ
शतभिषा

योगकारक

**शनि**
मिथुन
मृगशिरा

**राहु**
वृश्चिक
ज्येष्ठा

--

**केतु**
वृष
मृगशिरा

--

# जन्म कुंडली

## लग्न कुंडली

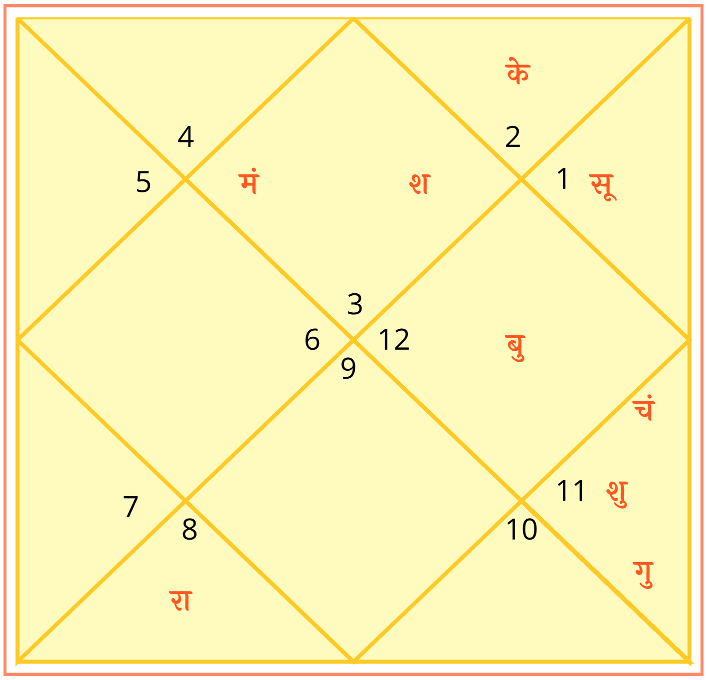


व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

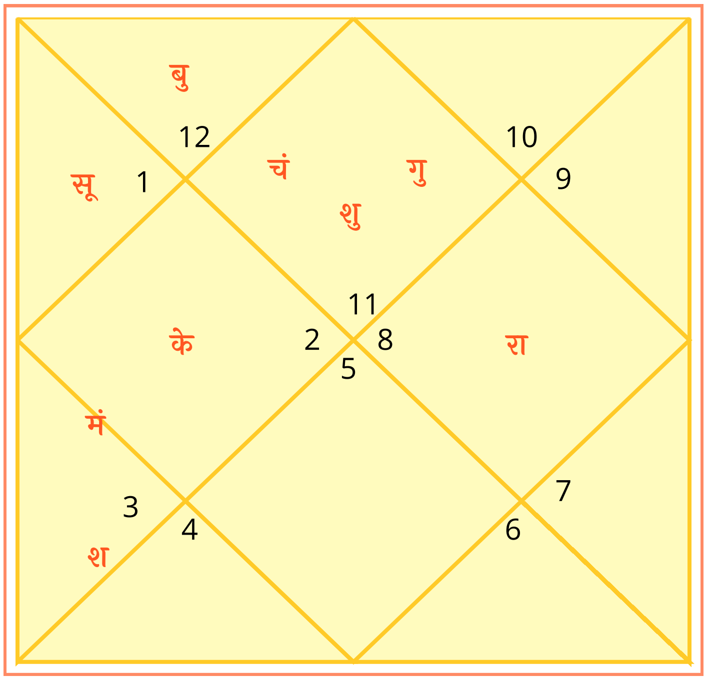


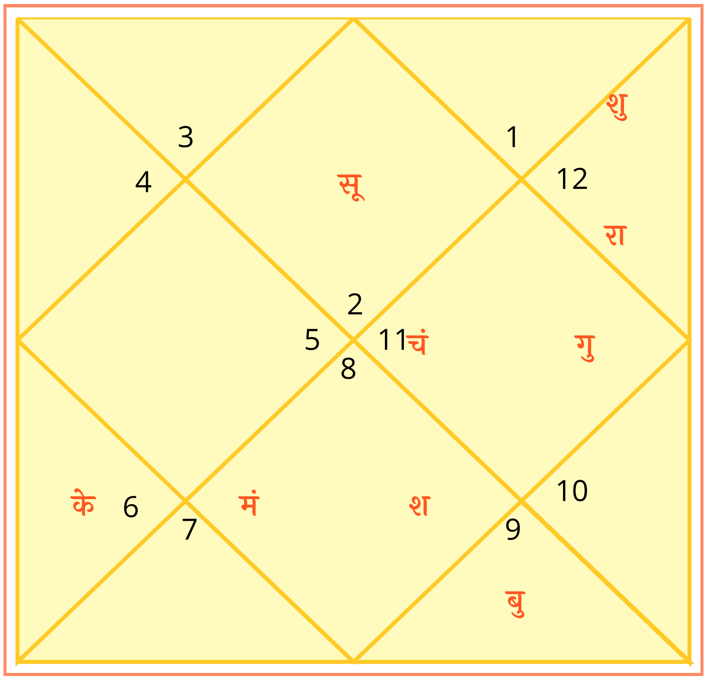


## चंद्र कुंडली

## नवमांश कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

# वर्ग कुंडली

## सूर्य कुंडली

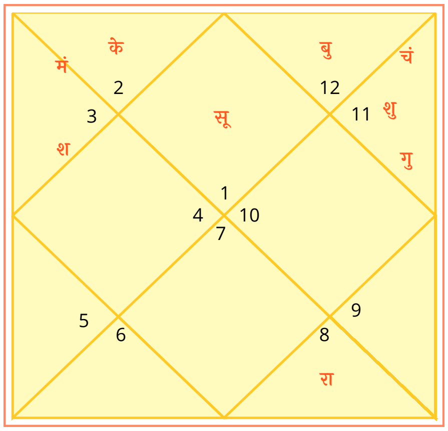


शरीर, स्वास्थ्य, रचना

## होरा कुंडली

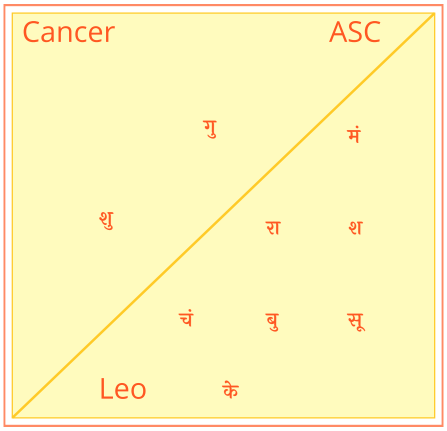


वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

## द्रेष्काण कुंडली

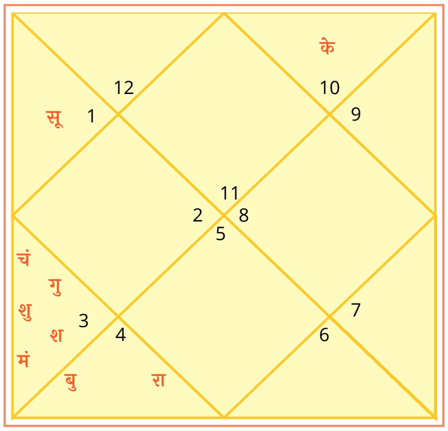


भाई बहन

## चतुर्थांश कुंडली

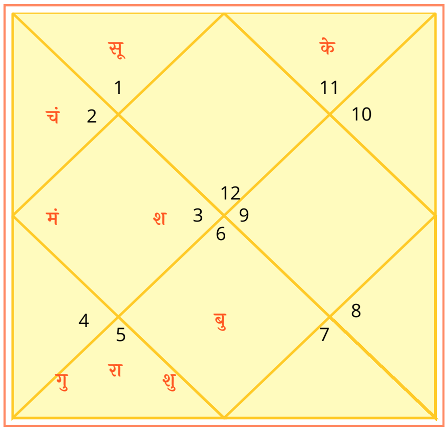


भाग्य

## पंचमांश कुंडली

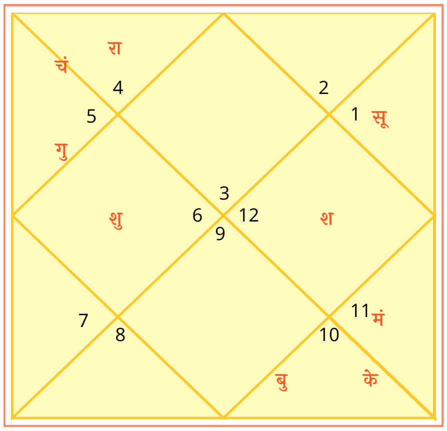


आध्यात्मिकता

## सप्तमांश कुंडली

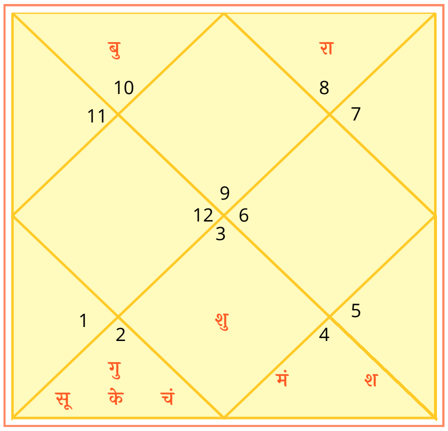


सन्तान

## अष्टमांश कुंडली

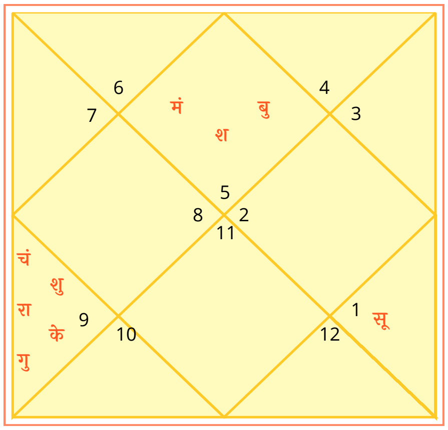


आयु

## दशमांश कुंडली

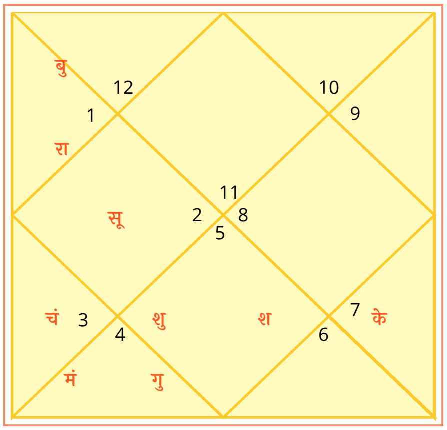


व्यवसाय, जीवनयापन

## द्वादशांश कुंडली

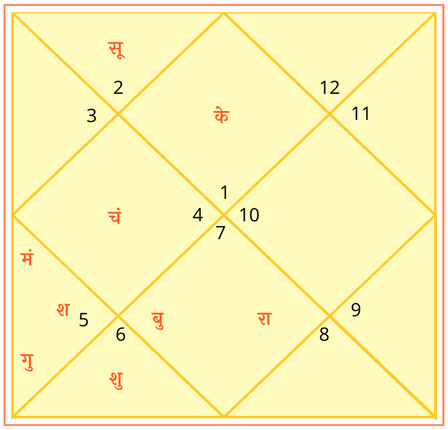


माता-पिता, पैतृक सुख

# भाव सन्धि

**लग्न** - 26:33:13 **दशम भाव मध्य** - 19:17:12

| भाव | जन्म राशि | भाव मध्य | जन्म राशि | भाव संधि |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 26:33:13 | कर्क | 10:20:33 |
| 2 | कर्क | 24:07:53 | सिंह | 07:55:13 |
| 3 | सिंह | 21:42:32 | कन्या | 05:29:52 |
| 4 | कन्या | 19:17:12 | तुला | 05:29:52 |
| 5 | तुला | 21:42:32 | वृश्चिक | 07:55:13 |
| 6 | वृश्चिक | 24:07:53 | धनु | 10:20:33 |
| 7 | धनु | 26:33:13 | मकर | 10:20:33 |
| 8 | मकर | 24:07:53 | कुम्भ | 07:55:13 |
| 9 | कुम्भ | 21:42:32 | मीन | 05:29:52 |
| 10 | मीन | 19:17:12 | मेष | 05:29:52 |
| 11 | मेष | 21:42:32 | वृष | 07:55:13 |
| 12 | वृष | 24:07:53 | मिथुन | 10:20:33 |

## चलित कुंडली

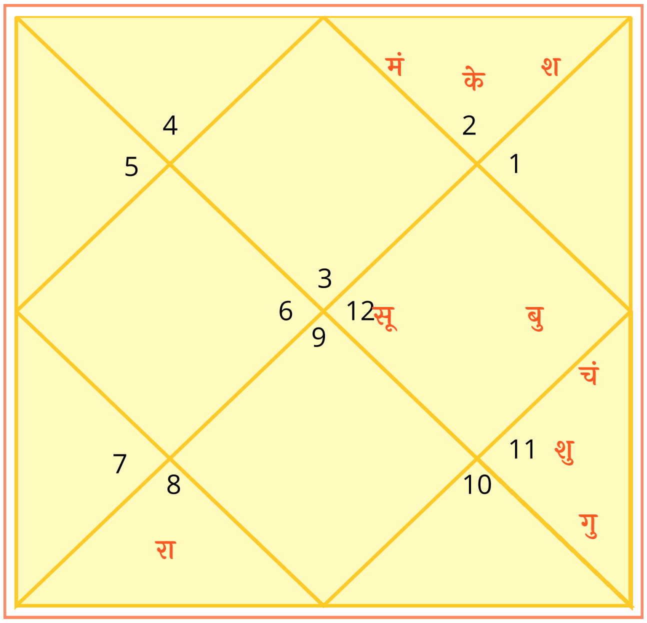


लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

# विम्शोत्तरी दशा - I

## राहु

1-1-1964 3:12
31-12-1981 15:12

| | |
|---|---|
| राहु | 13-9-1966 7:24 |
| गुरु | 5-2-1969 21:48 |
| शनि | 13-12-1971 20:54 |
| बुध | 2-7-1974 6:12 |
| केतु | 20-7-1975 18:30 |
| शुक्र | 20-7-1978 12:30 |
| सूर्य | 14-6-1979 5:54 |
| चन्द्र | 13-12-1980 2:54 |
| मंगल | 31-12-1981 15:12 |

## गुरु

31-12-1981 15:12
31-12-1997 15:12

| | |
|---|---|
| गुरु | 18-2-1984 20:0 |
| शनि | 1-9-1986 3:12 |
| बुध | 7-12-1988 0:48 |
| केतु | 12-11-1989 22:24 |
| शुक्र | 13-7-1992 22:24 |
| सूर्य | 2-5-1993 3:12 |
| चन्द्र | 1-9-1994 3:12 |
| मंगल | 8-8-1995 0:48 |
| राहु | 31-12-1997 15:12 |

## शनि

31-12-1997 15:12
31-12-2016 9:12

| | |
|---|---|
| शनि | 3-1-2001 10:15 |
| बुध | 13-9-2003 13:24 |
| केतु | 22-10-2004 9:3 |
| शुक्र | 23-12-2007 0:3 |
| सूर्य | 3-12-2008 23:45 |
| चन्द्र | 5-7-2010 7:15 |
| मंगल | 14-8-2011 2:54 |
| राहु | 20-6-2014 2:0 |
| गुरु | 31-12-2016 9:12 |

## बुध

31-12-2016 9:12
31-12-2033 15:12

| | |
|---|---|
| बुध | 30-5-2019 0:39 |
| केतु | 26-5-2020 5:36 |
| शुक्र | 27-3-2023 2:36 |
| सूर्य | 31-1-2024 13:42 |
| चन्द्र | 2-7-2025 0:12 |
| मंगल | 29-6-2026 5:9 |
| राहु | 15-1-2029 14:27 |
| गुरु | 23-4-2031 12:3 |
| शनि | 31-12-2033 15:12 |

## केतु

31-12-2033 15:12
31-12-2040 9:12

| | |
|---|---|
| केतु | 29-5-2034 18:39 |
| शुक्र | 29-7-2035 21:39 |
| सूर्य | 4-12-2035 17:45 |
| चन्द्र | 4-7-2036 19:15 |
| मंगल | 30-11-2036 22:42 |
| राहु | 19-12-2037 11:0 |
| गुरु | 25-11-2038 8:36 |
| शनि | 4-1-2040 4:15 |
| बुध | 31-12-2040 9:12 |

## शुक्र

31-12-2040 9:12
31-12-2060 9:12

| | |
|---|---|
| शुक्र | 1-5-2044 21:12 |
| सूर्य | 2-5-2045 3:12 |
| चन्द्र | 31-12-2046 21:12 |
| मंगल | 2-3-2048 0:12 |
| राहु | 2-3-2051 18:12 |
| गुरु | 31-10-2053 18:12 |
| शनि | 31-12-2056 9:12 |
| बुध | 1-11-2059 6:12 |
| केतु | 31-12-2060 9:12 |

# विम्शोत्तरी दशा - II

| सूर्य | |
|---|---|
| 31-12-2060 9:12<br>31-12-2066 21:12 | |
| सूर्य | 19-4-2061 23:0 |
| चन्द्र | 19-10-2061 14:0 |
| मंगल | 24-2-2062 10:6 |
| राहु | 19-1-2063 3:30 |
| गुरु | 7-11-2063 8:18 |
| शनि | 19-10-2064 8:0 |
| बुध | 25-8-2065 19:6 |
| केतु | 31-12-2065 15:12 |
| शुक्र | 31-12-2066 21:12 |

| चन्द्र | |
|---|---|
| 31-12-2066 21:12<br>31-12-2076 9:12 | |
| चन्द्र | 1-11-2067 6:12 |
| मंगल | 1-6-2068 7:42 |
| राहु | 1-12-2069 4:42 |
| गुरु | 2-4-2071 4:42 |
| शनि | 31-10-2072 12:12 |
| बुध | 1-4-2074 22:42 |
| केतु | 1-11-2074 0:12 |
| शुक्र | 1-7-2076 18:12 |
| सूर्य | 31-12-2076 9:12 |

| मंगल | |
|---|---|
| 31-12-2076 9:12<br>1-1-2084 3:12 | |
| मंगल | 29-5-2077 12:39 |
| राहु | 17-6-2078 0:57 |
| गुरु | 23-5-2079 22:33 |
| शनि | 1-7-2080 18:12 |
| बुध | 28-6-2081 23:9 |
| केतु | 25-11-2081 2:36 |
| शुक्र | 25-1-2083 5:36 |
| सूर्य | 2-6-2083 1:42 |
| चन्द्र | 1-1-2084 3:12 |

## वर्त्तमान दशा

| दशा नाम | ग्रह | आरम्भ तिथि | सम्पति तिथि |
|---|---|---|---|
| महादशा | बुध | 31-12-2016 9:12 | 31-12-2033 15:12 |
| अंतर्दशा | बुध | 31-12-2016 9:12 | 30-5-2019 0:39 |
| प्रत्यंतर दशा | बुध | 31-12-2016 9:12 | 4-5-2017 23:59 |
| सूक्ष्म दशा | शनि | 15-4-2017 6:26 | 4-5-2017 23:59 |

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

# योगिनी दशा - I

### धान्या (3 वर्ष)

30-7-1972 18:37
30-7-1975 18:37

| | |
|---|---|
| धान्या | 30-10-1972 2:7 |
| भ्रामरी | 28-2-1973 20:7 |
| भद्रिका | 31-7-1973 0:37 |
| उल्का | 29-1-1974 15:37 |
| सिद्धि | 30-8-1974 17:7 |
| संकटा | 1-5-1975 5:7 |
| मंगला | 31-5-1975 15:37 |
| पिंगला | 30-7-1975 18:37 |

### भ्रामरी (4 वर्ष)

30-7-1975 18:37
30-7-1979 18:37

| | |
|---|---|
| भ्रामरी | 9-1-1976 2:37 |
| भद्रिका | 30-7-1976 0:37 |
| उल्का | 30-3-1977 12:37 |
| सिद्धि | 8-1-1978 14:37 |
| संकटा | 29-11-1978 6:37 |
| मंगला | 8-1-1979 20:37 |
| पिंगला | 31-3-1979 0:37 |
| धान्या | 30-7-1979 18:37 |

### भद्रिका (5 वर्ष)

30-7-1979 18:37
30-7-1984 18:37

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 9-4-1980 10:7 |
| उल्का | 7-2-1981 19:7 |
| सिद्धि | 28-1-1982 21:37 |
| संकटा | 10-3-1983 17:37 |
| मंगला | 30-4-1983 11:7 |
| पिंगला | 9-8-1983 22:7 |
| धान्या | 9-1-1984 2:37 |
| भ्रामरी | 30-7-1984 18:37 |

### उल्का (6 वर्ष)

30-7-1984 18:37
30-7-1990 18:37

| | |
|---|---|
| उल्का | 31-7-1985 0:37 |
| सिद्धि | 30-9-1986 3:37 |
| संकटा | 30-1-1988 3:37 |
| मंगला | 31-3-1988 0:37 |
| पिंगला | 30-7-1988 18:37 |
| धान्या | 29-1-1989 9:37 |
| भ्रामरी | 29-9-1989 21:37 |
| भद्रिका | 30-7-1990 18:37 |

### सिद्धि (7 वर्ष)

30-7-1990 18:37
30-7-1997 18:37

| | |
|---|---|
| सिद्धि | 9-12-1991 22:7 |
| संकटा | 30-6-1993 2:7 |
| मंगला | 9-9-1993 2:37 |
| पिंगला | 29-1-1994 3:37 |
| धान्या | 30-8-1994 5:7 |
| भ्रामरी | 10-6-1995 7:7 |
| भद्रिका | 30-5-1996 9:37 |
| उल्का | 30-7-1997 18:37 |

### संकटा (8 वर्ष)

30-7-1997 18:37
30-7-2005 18:37

| | |
|---|---|
| संकटा | 11-5-1999 2:37 |
| मंगला | 31-7-1999 6:37 |
| पिंगला | 9-1-2000 14:37 |
| धान्या | 9-9-2000 2:37 |
| भ्रामरी | 30-7-2001 18:37 |
| भद्रिका | 9-9-2002 14:37 |
| उल्का | 9-1-2004 14:37 |
| सिद्धि | 30-7-2005 18:37 |

# योगिनी दशा - II

### मंगला (1 वर्ष)

30-7-2005 18:37
30-7-2006 18:37

| | |
|---|---|
| मंगला | 9-8-2005 22:7 |
| पिंगला | 30-8-2005 5:7 |
| धान्या | 29-9-2005 15:37 |
| भ्रामरी | 9-11-2005 5:37 |
| भद्रिका | 29-12-2005 23:7 |
| उल्का | 28-2-2006 20:7 |
| सिद्धि | 10-5-2006 20:37 |
| संकटा | 30-7-2006 18:37 |

### पिंगला (2 वर्ष)

30-7-2006 18:37
30-7-2008 18:37

| | |
|---|---|
| पिंगला | 9-9-2006 8:37 |
| धान्या | 9-11-2006 5:37 |
| भ्रामरी | 29-1-2007 9:37 |
| भद्रिका | 10-5-2007 20:37 |
| उल्का | 9-9-2007 14:37 |
| सिद्धि | 29-1-2008 15:37 |
| संकटा | 9-7-2008 23:37 |
| मंगला | 30-7-2008 18:37 |

### धान्या (3 वर्ष)

30-7-2008 18:37
30-7-2011 18:37

| | |
|---|---|
| धान्या | 30-10-2008 2:7 |
| भ्रामरी | 28-2-2009 20:7 |
| भद्रिका | 31-7-2009 0:37 |
| उल्का | 29-1-2010 15:37 |
| सिद्धि | 30-8-2010 17:7 |
| संकटा | 1-5-2011 5:7 |
| मंगला | 31-5-2011 15:37 |
| पिंगला | 30-7-2011 18:37 |

### भ्रामरी (4 वर्ष)

30-7-2011 18:37
30-7-2015 18:37

| | |
|---|---|
| भ्रामरी | 9-1-2012 2:37 |
| भद्रिका | 30-7-2012 0:37 |
| उल्का | 30-3-2013 12:37 |
| सिद्धि | 8-1-2014 14:37 |
| संकटा | 29-11-2014 6:37 |
| मंगला | 8-1-2015 20:37 |
| पिंगला | 31-3-2015 0:37 |
| धान्या | 30-7-2015 18:37 |

### भद्रिका (5 वर्ष)

30-7-2015 18:37
30-7-2020 18:37

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 9-4-2016 10:7 |
| उल्का | 7-2-2017 19:7 |
| सिद्धि | 28-1-2018 21:37 |
| संकटा | 10-3-2019 17:37 |
| मंगला | 30-4-2019 11:7 |
| पिंगला | 9-8-2019 22:7 |
| धान्या | 9-1-2020 2:37 |
| भ्रामरी | 30-7-2020 18:37 |

### उल्का (6 वर्ष)

30-7-2020 18:37
30-7-2026 18:37

| | |
|---|---|
| उल्का | 31-7-2021 0:37 |
| सिद्धि | 30-9-2022 3:37 |
| संकटा | 30-1-2024 3:37 |
| मंगला | 31-3-2024 0:37 |
| पिंगला | 30-7-2024 18:37 |
| धान्या | 29-1-2025 9:37 |
| भ्रामरी | 29-9-2025 21:37 |
| भद्रिका | 30-7-2026 18:37 |

# योगिनी दशा - III

### सिद्धि (7 वर्ष)

30-7-2026 18:37
30-7-2033 18:37

| | |
|---|---|
| सिद्धि | 9-12-2027 22:7 |
| संकटा | 30-6-2029 2:7 |
| मंगला | 9-9-2029 2:37 |
| पिंगला | 29-1-2030 3:37 |
| धान्या | 30-8-2030 5:7 |
| भ्रामरी | 10-6-2031 7:7 |
| भद्रिका | 30-5-2032 9:37 |
| उल्का | 30-7-2033 18:37 |

### संकटा (8 वर्ष)

30-7-2033 18:37
30-7-2041 18:37

| | |
|---|---|
| संकटा | 11-5-2035 2:37 |
| मंगला | 31-7-2035 6:37 |
| पिंगला | 9-1-2036 14:37 |
| धान्या | 9-9-2036 2:37 |
| भ्रामरी | 30-7-2037 18:37 |
| भद्रिका | 9-9-2038 14:37 |
| उल्का | 9-1-2040 14:37 |
| सिद्धि | 30-7-2041 18:37 |

### मंगला (1 वर्ष)

30-7-2041 18:37
30-7-2042 18:37

| | |
|---|---|
| मंगला | 9-8-2041 22:7 |
| पिंगला | 30-8-2041 5:7 |
| धान्या | 29-9-2041 15:37 |
| भ्रामरी | 9-11-2041 5:37 |
| भद्रिका | 29-12-2041 23:7 |
| उल्का | 28-2-2042 20:7 |
| सिद्धि | 10-5-2042 20:37 |
| संकटा | 30-7-2042 18:37 |

### पिंगला (2 वर्ष)

30-7-2042 18:37
30-7-2044 18:37

| | |
|---|---|
| पिंगला | 9-9-2042 8:37 |
| धान्या | 9-11-2042 5:37 |
| भ्रामरी | 29-1-2043 9:37 |
| भद्रिका | 10-5-2043 20:37 |
| उल्का | 9-9-2043 14:37 |
| सिद्धि | 29-1-2044 15:37 |
| संकटा | 9-7-2044 23:37 |
| मंगला | 30-7-2044 18:37 |

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

# शुभाशुभ अंक

| 7 | 9 | 6 |
|---|---|---|
| भाग्यांक | मूलांक | नामांक |

| | |
|---|---|
| आपका नाम | Rajesh |
| जन्म दिनांक | 18-4-1974 |
| मूलांक | 9 |
| मूलांक स्वामी | मंगल |
| मित्र अंक | 1,2,3,6 |
| सम अंक | 4,5,8 |
| शत्रु अंक | 7 |
| शुभ दिन | मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार |
| शुभ रत्न | लाल मूंगा |
| शुभ उपरत्न | संगमूंगी |
| शुभ देवता | हनुमान |
| शुभ धातु | तांबा |
| शुभ रंग | ईंट जैसा लाल |
| शुभ मंत्र | \|\| ओम अंग अंगारकाय नमः \|\| |

# अंक ज्योतिषीय फल

9

## आपके बारे में

आपका मूलांक नौ है । मूलांक नौ का स्वामी मंगल है । मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है । अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया, इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी । रोजगार व्यवसाय मे एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी । आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यो को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे । स्वभाव में तेजी रहेगी । फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी । आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये ।

आपके स्वभाव में सहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यो से सदैव दूर रहना हितकारी रहेगा । आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगें । खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी--कभी नुकसान भी उठायेंगे । अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें । मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी । इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे । शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा ।

आपके स्वभाव में सहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यो से सदैव दूर रहना हितकारी रहेगा । आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगें । खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी--कभी नुकसान भी उठायेंगे । अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें । मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी । इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे । शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा ।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है । इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी । बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यो में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी । शारीरिक श्रम साध्य कार्यो में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी । चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा और कभी

## आपके के लिए शुभ समय

मंगल दिनांक २३ मार्च से २० अप्रैल तक एवं २४ अक्टूबर से २१ नवम्बर तक पाश्च्यात मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है । भारतीय मत से यह १३ अप्रैल से १२ मई एवं १४ नवम्बर से १४ दिसंबर होआ है । मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं । दिनांक १४ जनवरी से १३ फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक ९ के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है ।

## शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा ।

गायत्री मंत्र -

|| ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ||

आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे । ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा । धर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा ।
भाग्य आपका बदलता रहेगा । एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा । आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी । आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन -धान्य से आप सुखी रहेंगे । आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यो को बीच में छोड़कर आगे बढने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे ।

# कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनन्त | कुलिक | वासुकी | शंखपाल |
| पद्म | महापद्म | तक्षक | कर्कोटक |
| शंखचूड़ | घातक | विषधर | शेषनाग |

## आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

!!

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

दिशा

--

## कालसर्प दोष का प्रभाव

सामान्यतः काल सर्प दोष/योग जीवन के सभी पहलुओं में संघर्ष देता है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य, धन, करियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतान तथा जीवन से संबंधित कई अन्य मामलें हों । परन्तु, जातक की कुंडली में उपस्थित काल सर्प दोष/योग के सटीक प्रभाव को जानना अति आवश्यक है । क्या यह दोष/योग स्वास्थ्य, धन, कैरियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतति या हमारे जीवन से संबंधित अन्य चीजों में बुरा प्रभाव और संघर्ष दे रहा है? यह आप कैसे जान सकते हैं ?

इसका निर्णय जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में राहु तथा केतु की स्तिथि को जानकर हो सकता है । उद्धारणार्थ, यदि राहु लग्न में और केतु सप्तम भाव में स्तिथ हों तो व्यक्ति को स्वास्थ्य और धन में कठिनाइयों आ सकती हैं क्योंकि प्रथम भाव जातक की सेहत तथा जीवन संघर्ष का सूचक है । उसी प्रकार, यदि राहु द्वितीय भाव में हो तो व्यक्ति को उसी भाव से सम्बंधित मामलों जैसे पारिवारिक रिश्तों तथा धन प्राप्ति में संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है । तो इस प्रकार, जन्म कुंडली के बारह भावों में बन रहे काल सर्प दोष/योग के प्रभावों के अंकन से बारह प्रकार के काल सर्प दोष/योग बनते हैं ।

## कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यन्त्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- रुद्राभिषेक - भगवान शिव का रुद्राभिषेक अथवा पंचोपचार पूजन उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर या किसी ज्योतिर्लिंग शिव मंदिर में करें।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंतर्दशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

# मांगलिक विश्लेषण - I

## मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रुप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

**लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |**
**शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||**

## मांगलिक विश्लेषण

| कुल मांगलिक प्रतिशत | 23.25% |
|---|---|

## मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

# मांगलिक विश्लेषण - II

## भाव के आधार पर

लग्न भाव में मंगल अवस्थित है।

शनि लग्न भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

केतु आपके कुंडली में द्वादश भाव में है।

## दृष्टि के आधार पर

राहु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

मंगल , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

केतु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

सप्तम भाव शनि से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव मंगल से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

## मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

# साढ़ेसाती विश्लेषण

## साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

## क्या आप साढ़ेसाती में है

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

| | |
|---|---|
| विचार करने का दिनाकं | 24-4-2017 |
| शनि राशि | धनु |
| चंद्र राशि | कुम्भ |
| वक्री शनि ? | हाँ |

# रत्न उपाय विचार

*वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।*

## जीवन रत्न

पन्ना

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

## कारक रत्न

हीरा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

## भाग्य रत्न

नीलम

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरुप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

# जीवन रत्न

## जीवन रत्न - पन्ना

| | | | |
|---|---|---|---|
| विकल्प | हरा गोमेद | दिन | बुधवार |
| उंगली | कनिष्ठा | अधिदेवता | बुद्ध |
| भार | 4 - 6.25 कैरेट | धातु | स्वर्ण |

### विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है । पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है । यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है ।

### भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

### पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः

### प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

### उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें ।

### विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

### सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

# कारक रत्न

## कारक रत्न - हीरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| विकल्प | ओपल / जिरकॉन | दिन | शुक्रवार |
| उंगली | कनिष्ठा | अधिदेवता | शुक्र |
| भार | 1 - 4.25 कैरेट | धातु | चांदी |

### विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है । हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है । हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।

### भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए । इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

### पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

### प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

### उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है ।

### विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है ।

### सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

# भाग्य रत्न

## भाग्य रत्न - नीलम

| | | | |
|---|---|---|---|
| विकल्प | नीली | दिन | शनिवार |
| उंगली | मध्यमिका | अधिदेवता | शनि |
| भार | 3 - 4.25 कैरेट | धातु | |

### विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है । नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है ।

### भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए । इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

### पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है ।

### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः**

### प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

### उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है ।

### विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

### सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

## लग्न फल - मिथुन

| | |
|---|---|
| स्वामी | बुध |
| प्रतीक | युगल |
| विशेषताएँ | वायु तत्त्व, द्विस्वभाव, पश्चिम |
| भाग्यशाली रत्न | पन्ना |
| व्रत का दिन | पूर्णिमा |

**देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |**
**सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||**

मिथुन राशि के व्यक्ति मित्रवत, अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने में कुशल, मिलनसार, अस्थिरचित्त, अनिश्चित,एक समय पर एक साथ दो या अधिक कार्यों में रुचि लेने वाले, हाज़िर जवाब,बुद्धिमान , मानसिक रुप से अधिक सक्रिय ,अति-भावुक ,थोड़े तुनकमिज़ाज अशांत या घबरा जाने वाले , वाचाल , अगंभीर और हमेशा कुछ अलग करने के लिए तैयार रहने वाले होते हैं ।

मिथुन राशि दो जुड़वाँ बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है,इसलिए आपके व्यक्तित्व के भी दो अलग अलग पक्ष हो सकते हैं । आप जो पहले से ही जानते हैं और उससे अधिक सीखने के लिए आपको यह बात लोगों तक पहुचाने की प्रबल आवश्यकता है।

> “ आप पढ़ने और यात्रा करने में आनंद लेते हैं और इन दोनों कार्यों में नवीनतम ज्ञान प्राप्ति की ढेरों संभावनाएं हैं। आपको विविधता पसंद है और ऐसा हो सकता है कि आप सभी कार्यों में थोड़े थोड़े निपुण हों लेकिन किसी भी कार्य में पूर्णतः प्रवीण ना हों।

आपका रुझान विस्तृत रुप से बातों के विस्तार में होगा लेकिन आप उनकी गहराई में जाने का प्रयत्न नहीं करेंगे । आप उपर से आत्मविश्वासपूर्ण दिखाई दे सकते हैं, लेकिन आप में आत्मविश्वास और आंतरिक स्थिरता की कमी हो सकती है ।

आप को बोलना अच्छा लगता है ,अपने मुँह से और साथ ही हाथों के इस्तेमाल से ।

> “ मिथुन राशि का स्वामी है बुध, इसलिए बुध आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।

ॐ

## सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

### नियंत्रण: (सीखना और ऊर्जा बर्बाद करने की अपेक्षा उसकी प्राथमिकता को जानें)

#### सकारात्मक लक्षण

प्रज्ञात्मक | योजनाकार | बहुमुखी अनुकूलनीय | तार्किक

#### नकारात्मक लक्षण

ढुलमुल मन | अधीर | गपशप करना | तिकड़मबाज

# i-WebnApp Technologies Pvt. Ltd.

With the help of our experts we does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your horoscope and provide you this Janam Patrika in PDF format.


| | | |
|---|---|---|
| **Website** | : | http://www.iwebnapp.com |
| **Email** | : | iwebnapp@gmail.com |
| **Mobile** | : | +91 94250-91067 |
| **Ladline** | : | +91- 0734-4070667 |